मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 5.00
चोर-चोर
मौसेरे
भाई
मनोज
कॉमिक्स

लेखक:— विजय कुमार वत्स
चित्रांकन:— प्रकाश बांदोडकर
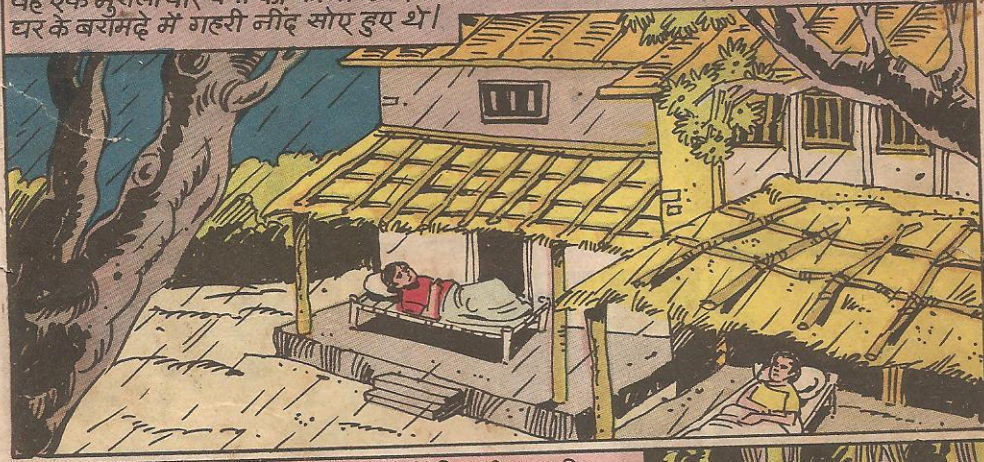
तभी —

पकड़ो... पकड़ो. चोर... चोर.

शेखर! देखो, चोर इधर ही दौड़कर आ रहे हैं।

बिरजू! पता नहीं ये चोर किसके यहां से चोरी करके भाग रहे हैं? फिर भी जैसे ही ये भागकर हमारे नजदीक आएं, हमें दौड़कर इन्हें दबोच लेना चाहिए।

तुम ठीक कह रहे हो शेखर!
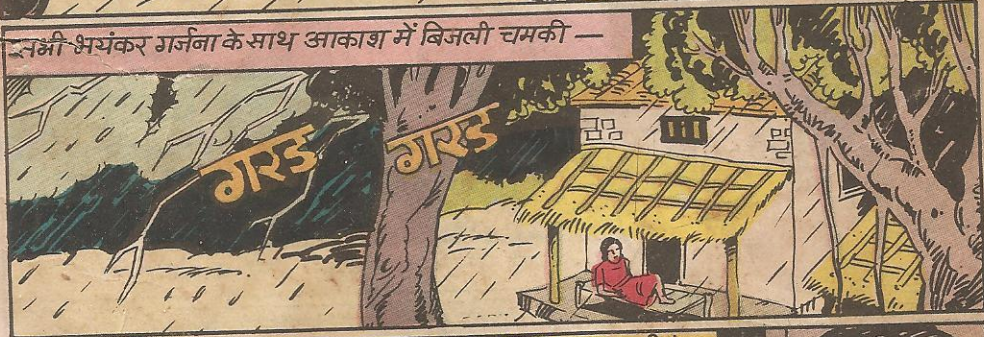
और फिर जैसे ही दोनों चोर भागते हुए उनकी ओर आए ...

...शेखर और बिरजू ने दोनों चोरों को दबोच लिया।

और जब शेखर और बिरजू की दृष्टि दोनों चोरों के मुंह पर पड़ी तो वे बुरी तरह उछल पड़े।

शेरू, तुम!

मंगलू, तुम!
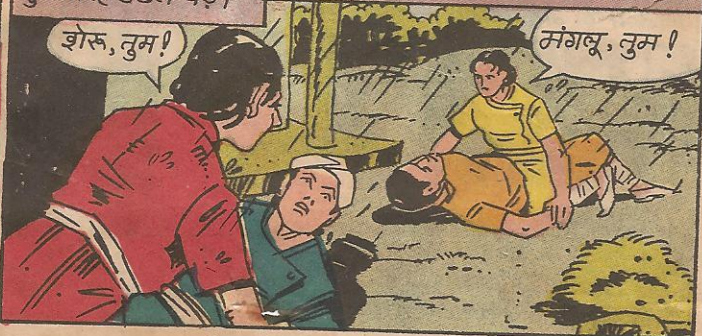
शेखर और बिरजू के नीचे दबे शेरू और मंगलू गुर्राते हुए बोले —
शेखर और बिरजू, जल्दी से हमें छोड़ दो, वरना इसका अंजाम बहुत बुरा होगा।
अच्छा, एक तो चोरी और ऊपर से सीनाजोरी।
हम तुम दोनों को किसी भी हालत में नहीं छोड़ेंगे। कुछ ही देर में तुम्हारा पीछा करते हुए गांव वाले यहां पहुंच जायेंगे। तब हम तुम दोनों को उन्हें सौंप देंगे।
यह सुनकर शेरू ने धमकी दी —
मैं तुम दोनों से आखिरी बार कह रहा हूं, हमें छोड़ दो, वरना मैं तुम्हें बख्शूंगा नहीं।
बेशक तू हमें न बख्शना, पर हम तुम दोनों को छोड़ेंगे नहीं।
और फिर शेखर और बिरजू ने शेरू और मंगलू को और कसकर पकड़ लिया।
कुछ देर बाद ही शेरू और मंगलू का पीछा करते हुए गांव वाले नजदीक आ पहुंचे।
अगर इस समय शीघ्रता से मैंने अपने बचाव के लिए कुछ न किया तो मैं गांव वालों की पकड़ में आ जाऊंगा।
यही मंगलू भी सोच रहा था।
अगले ही पल मंगलू और शेरू ने अपनी सारी शक्ति बटोरी और —
आह!
उफ!
शेखर और बिरजू उछलकर दूर जा गिरे।

मंगलू! जल्दी कर। इससे पहले कि गांव वाले हमें आकर पकड़ें, हमें माल के साथ यहां से चम्पत हो जाना चाहिए।

तुम ठीक कह रहे हो शेरू।

शेरू और मंगलू ने चोरी के माल की पोटलियां उठाईं और वहां से भागने लगे।

बिरजू! उठ। अगर हमने एक पल को भी देरी की तो शेरू और मंगलू हमारे हाथ से निकल जायेंगे।
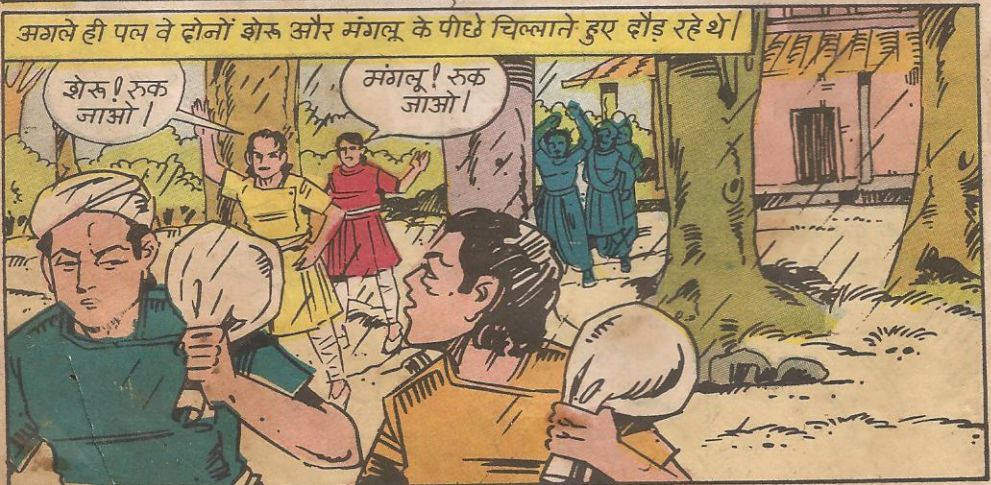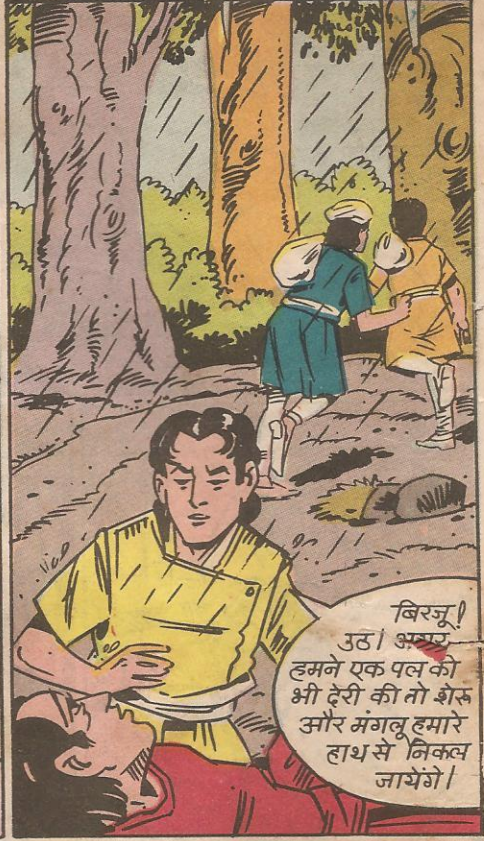
जल्दी ही शेखर और बिरजू ने पुनः शेरू और मंगलू को पकड़ लिया।
तुम दोनों ने हमारी बात नहीं मानी। अब देखना, हम तुम्हें कैसा मजा चखाते हैं ?
तभी दौड़ते हुए गांव वाले उनके समीप आ पहुंचे।
जल्दी करो, अब ये भागने न पाएं।
पकड़ लो इन चोरों को।
गांव वालों ने आगे बढ़कर शेरू और मंगलू को पकड़ लिया। तब गांव के मुखिया ने उनसे कहा—
कम्बख्तो ! तुम्हें शर्म नहीं आती, अपने ही गांव में चोरी करते हो ?
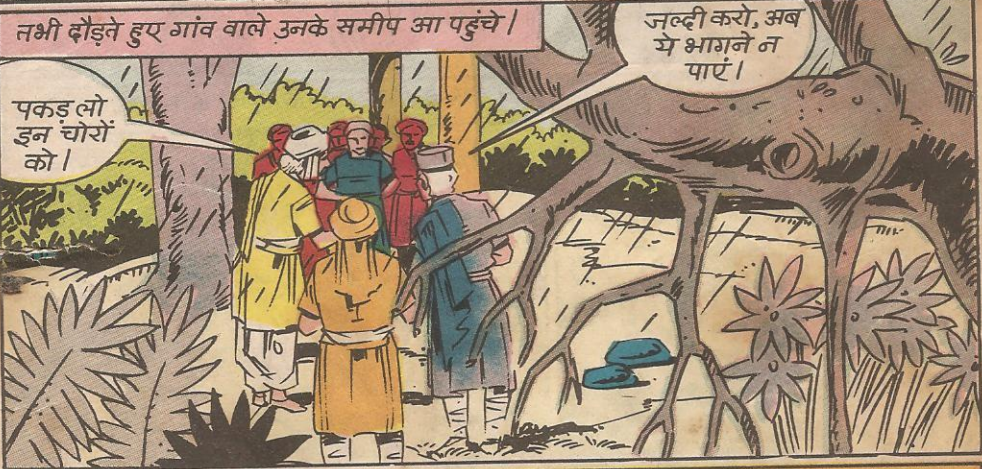
मुखिया की फटकार का शेरू और मंगलू पर कोई असर नहीं हुआ और शेरू हंसता हुआ बोला —
मुखिया जी! आप तो मेरे और मंगलू के साथ बहुत नाइंसाफी कर रहे हो।
कैसी नाइंसाफी?

मुखिया जी! आपने मुझे और मंगलू को तो पकड़ लिया, लेकिन हमारे बाकी और दो साथियों को नहीं पकड़ा।
क्या? तुम्हारे दो साथी और हैं? जरा बताओ तो, कहां हैं वे? हम उन्हें भी पकड़ेंगे।

तब शेरू ने शेखर और बिरजू की ओर इशारा करके कहा—
मुखिया जी! शेखर और बिरजू ही हमारे बाकी दो साथी हैं।
क्या कह रहे हो तुम? बिरजू और शेखर तुम्हारे
हैं?
शेरू की बात सुनकर शेखर और बिरजू भी हैरत से उछल पड़े।

दूसरी ओर मंगलू ने मुखिया से कहा —
मुखिया जी! शेरू ठीक कह रहा है। शेखर और बिरजू भी हमारे साथी हैं। हम चारों ही मिलकर चोरी करते हैं।
मंगलू की बात सुनकर शेखर चिल्लाया —
मुखिया जी! ये दोनों चोर झूठ बोल रहे हैं। बिरजू और मैं इन चोरों के साथी नहीं हैं, बल्कि हम दोनों ने तो इन्हें पकड़ा है। आपने भी देखा होगा, हम इनके पीछे दौड़कर इन्हें पकड़ने की कोशिश कर रहे थे।
हां, यह तो हमने देखा था।
मुखिया जी! अब मैं सारी बात साफ करता हूं। शेखर और बिरजू चोरी के माल के बंटवारे को लेकर हमसे झगड़ पड़े थे। और बंटवारे का ज्यादा माल हड़पने के लिए हमें पकड़ने की कोशिश कर रहे थे।
ओह! तो यह बात है।
शेखर और बिरजू जैसे भले लड़के भी चोरी करेंगे, यह तो हम कभी सपने में भी नहीं सोच सकते थे।
गांव वाले शेरू और मंगलू के साथ-साथ शेखर और बिरजू को भी भला-बुरा कहने लगे।
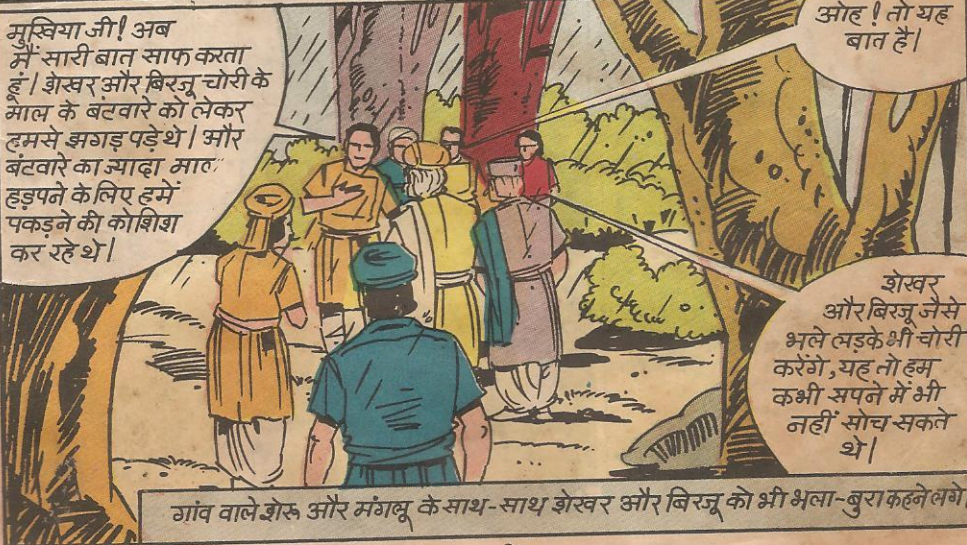
तब मुखिया ने सबसे कहा—
इस समय रात है और मुसलाधार बारिश हो रही है। इसलिए इस समय इन चारों चोरों को ले जाकर पंचायत-घर के एक कमरे में बंद कर देना ठीक रहेगा। कल सुबह होने पर पंचायत में इन चारों को सजा सुनाई जाएगी।
मुखिया जी ठीक कह रहे हैं।

बस, उसी समय गांव वाले शेखर, बिरजू, शेरू और मंगलू को पकड़कर पंचायत-घर की ओर चल पड़े। बेवक्त की मुसीबत को सिर पर पड़े देखकर शेखर और बिरजू हत्प्रभ से थे।
आज भली मुसीबत में फंसे। चोरों को पकड़ने चले थे और खुद ही चोर बन बैठे।
अब क्या होगा? क्या शेरू और मंगलू के साथ-साथ हमें भी सजा सुनाई जाएगी?

उन चारों को पंचायत-घर के एक कमरे में बंद कर दिया गया।

अगले दिन जब वर्षा रुकी तो पंचायत-घर में पंचायत बैठी।
गांववालो! कल रात इन चारों ने हरिया के घर में घुसकर चोरी की थी। हमने दौड़-भाग करके चोरी के माल के साथ इन चोरों को पकड़ लिया। आज इन चोरों को इनके जुर्म की सजा सुनाई जाएगी।

इसके पश्चात् पंचों ने काफी देर तक आपस में सलाह - मशवरा किया। तत्पश्चात् एक पंच ने उठकर कहा —
चूंकि बिरजू, शेखर, शेरू व मंगलू ने चोरी जैसा संगीन जुर्म किया है, इसलिए पंच परमेश्वर इन चारों को गांव से निकालने की घोषणा करते हैं। आज के बाद इन चारों में से कोई भी इस गांव में नजर नहीं आना चाहिए।
पंच की बात सुनकर बिरजू और शेखर के चेहरे का रंग उड़ गया। शेखर विनयपूर्वक मुखिया जी से बोला —
मुखिया जी! आपको गलतफहमी हुई है। मैंने और बिरजू ने चोरी में शेरू और मंगलू का साथ नहीं दिया था।
हां मुखिया जी! शेखर ठीक कह रहा है।
सुनकर मुखिया जी ने मुंह बिचकाकर उन दोनों की ओर देखते हुए कहा —
शेखर और बिरजू! तुम दोनों को हम और गांव के सभी लोग बहुत शरीफ व सज्जन समझते थे। तुमने हम लोगों के विश्वास को तोड़ा है। क्योंकि सारे गांव वालों और हमने चोरी के माल और मंगलू व शेरू के साथ तुम्हें पकड़ा था, इसलिए अब इस बारे में तुम लोगों को कोई सफाई देने की जरूरत नहीं है।
सुनकर दोनों के चेहरे लटक गए।
फैसला सुनाकर पंचायत समाप्त हो गई। तब दुखी से शेखर और बिरजू अपने घर की ओर चल दिए। राह में शेरू और मंगलू उन्हें मिले।
देखा छोकरो, हमसे उलझने का तुम्हें क्या फल मिला?
हमने जो कहा था, कर दिखाया। न तुम हमें पकड़ते, न आज तुम्हें हमारी तरह गांव से निकलना पड़ता।
शेखर और बिरजू ने दोनों की बात का कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप अपने घर की ओर बढ़ गए।
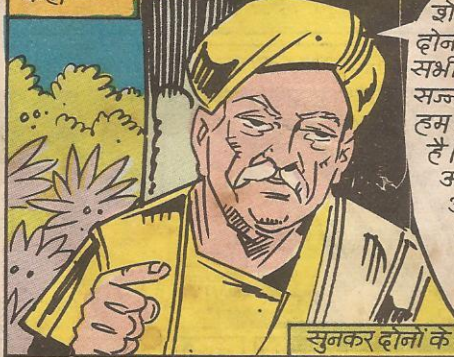
जैसे ही वे दोनों अपने-अपने घर के बाहर पहुंचे —
घर में घुसने की कोई जरूरत नहीं है। वहीं रुक जाओ। तुमने चोरी करके हमारी नाक कटवा दी है। अब हमारा तुमसे कोई वास्ता नहीं है। जाओ, यहां से चले जाओ।
अपने-अपने पिताओं का आदेश सुनकर बिरजू और शेखर के कदम जहां के तहां रुक गए।
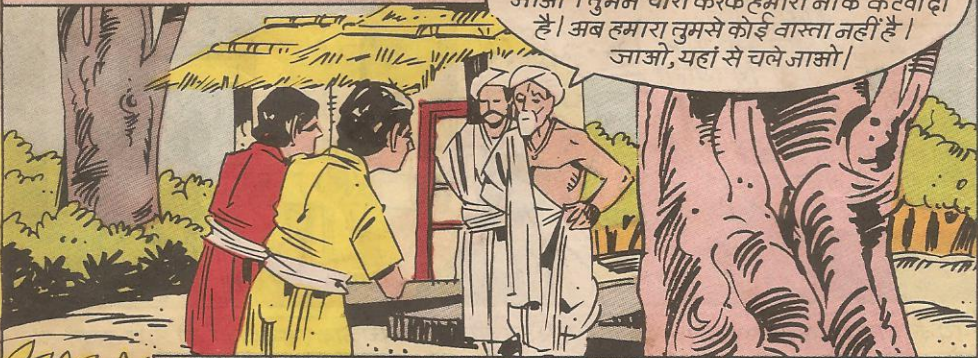
वे कुछ क्षण वहीं खड़े रहे, फिर गरदन झुकाकर वहां से चल दिए।
बिरजू! गांववालों और घरवालों ने तो हमें त्याग दिया, अब हम कहां जाएं?
शेखर! घबराने की कोई बात नहीं है। हम हट्टे-कट्टे युवक हैं। हमें कहीं न कहीं कोई न कोई काम मिल ही जाएगा। आओ, काम की खोज में गांव से दूर निकल चलें।

दूसरी ओर मंगलू और शेरू भी गांव छोड़कर चल पड़े।
चल भई मंगलू, गांव-वालों ने तो हमें गांव से बाहर निकाल दिया। अब किसी और गांव में चलकर चोरी करेंगे।

अभी वे कुछ ही दूर पहुंचे थे कि —
रुको भाई, रुको!

युवती की पुकार सुनकर शेरू और मंगलू ठिठककर रुक गए।
कौन हो तुम?
तुमने हमें क्यों पुकारा?

तो तुम मुझे नहीं जानते हो?
नहीं!

तो सुनो, मेरा नाम बुराई है। तुमने बुरे काम कर-करके मेरा खूब नाम रोशन किया है। मैं तुमसे बहुत खुश हूं।
ओह! तो तुम बुराई हो?
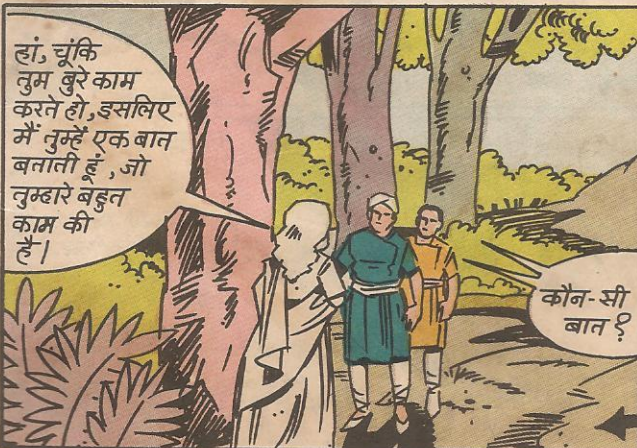
हां, चूंकि तुम बुरे काम करते हो, इसलिए मैं तुम्हें एक बात बताती हूं, जो तुम्हारे बहुत काम की है।
कौन-सी बात?
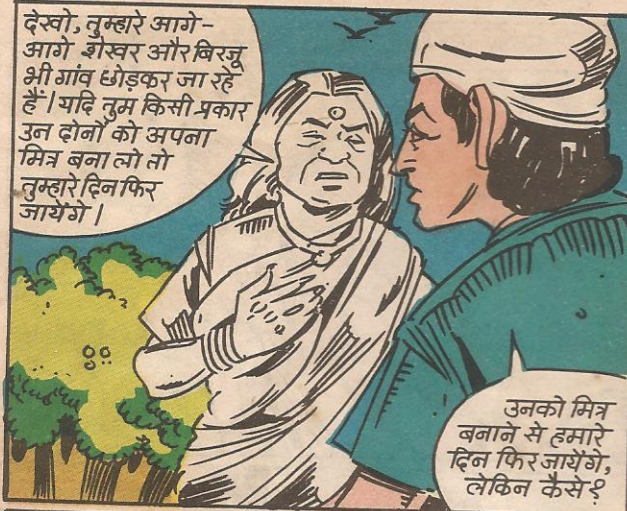
देखो, तुम्हारे आगे-आगे शेखर और बिरजू भी गांव छोड़कर जा रहे हैं। यदि तुम किसी प्रकार उन दोनों को अपना मित्र बना लो तो तुम्हारे दिन फिर जायेंगे।
उनको मित्र बनाने से हमारे दिन फिर जायेंगे, लेकिन कैसे?
क्योंकि शेखर और बिरजू के भाग्य में राजसुख लिखा है। एक दिन वे दोनों राजसी पद पर पहुंच जायेंगे। यदि तुम छल-कपट से उन्हें अपना मित्र बना लो तो उनके स्थान पर तुम दोनों राजसी सुख भोगोगे।
ऐसा?
तब तो हम शेखर और बिरजू को अवश्य ही मित्र बनायेंगे।
तो जाओ, शुभ काम में देरी कैसी? आगे बढ़ो और नगर-नगर गांव-गांव में मेरा, यानी बुराई का प्रचार करो। इसी में तुम्हारी भलाई है।
इतना कहकर बुराई अदृश्य हो गई।
बुराई के अंतर्ध्यान होने के पश्चात् मंगलू ने शेरू से कहा—
शेरू! बिरजू और शेखर हमारे ही कारण गांव से निकाले गए हैं। इसलिए वे भला हम दोनों को अपना मित्र क्यों बनायेंगे?
मंगलू! तू भी निरा गधा ही रहा! तू देख तो सही, मैं उन दोनों के सामने पहुंचकर कैसा रंग जमाता हूं। जिससे प्रभावित होकर शेखर और बिरजू तुरन्त हम दोनों को अपना मित्र बनाने को तैयार हो जायेंगे।

तब वे दोनों तेजी से आगे की ओर बढ़ गए।

कुछ दूर चलने पर उन्हें शेखर और बिरजू जाते हुए दिखाई दे गए। शेरू ने उन्हें आवाज दी —
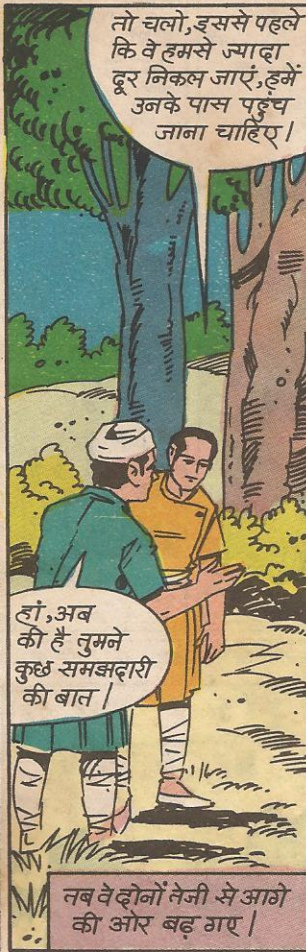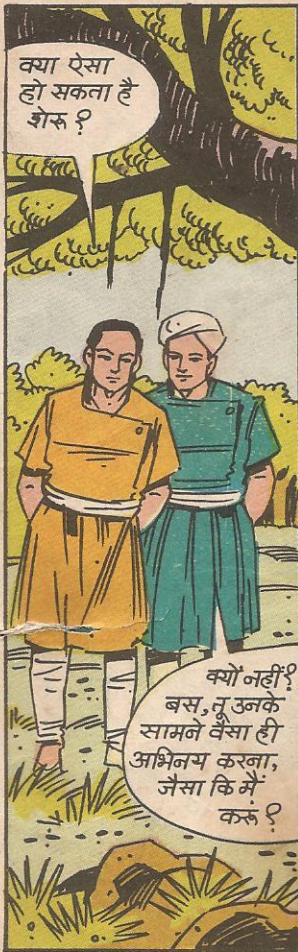
पुकार सुनकर बिरजू और शेखर रुक गए। तब शेरू और मंगलू उनके पास आए। उन्हें अपने सामने पाकर बिरजू ने भृकुटि टेढ़ी करके पूछा —

...इसका मुझे और मंगलू को बहुत खेद है। तुम दोनों हमें क्षमा कर दो।
शेरू! हम तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आने वाले। जाओ, अपना रास्ता नापो।
नहीं बिरजू, जब तक तुम दोनों हमें माफी नहीं दोगे, तब तक हम यहां से नहीं जायेंगे।
हां, तब तक हम यहां से नहीं जायेंगे।
इतना कहकर शेरू और मंगलू वहीं बैठ गए और बुक्का फाड़कर रोने लगे —
बू...हू...हू...!
बू...हू...हू...!
अरे...रे... ये तो रोने लगे?
जब शेरू और मंगलू को रोते हुए काफी देर हो गई...
...तो शेखर ने आगे बढ़कर उन दोनों से कहा —
लगता है, तुम दोनों को सचमुच ही अपनी गलती का अहसास हो गया है। जाओ, मैं और बिरजू तुम्हें माफ करते हैं।
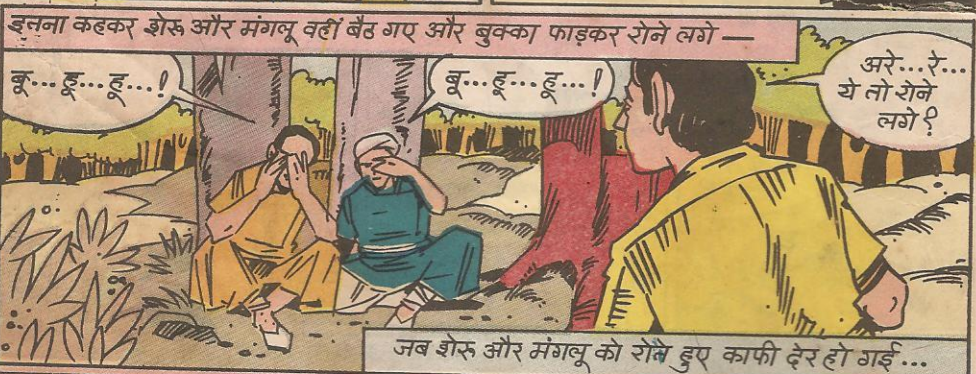
यह सुनकर बुरी तरह रोते हुए शेरू और मंगलू चुप हो गए और झटके से गरदन उठाकर बोले—

मंगलू और शेरू झट से शेखर और बिरजू के गले लग गए।
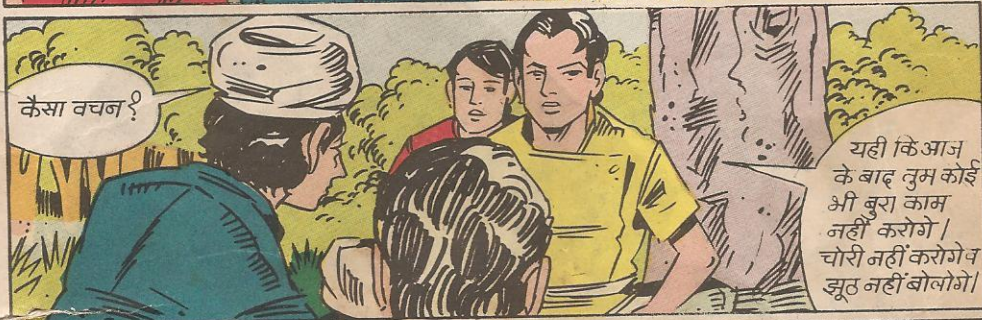
तब शेरू ने बिरजू और शेखर से कहा —
मित्रो ! चूंकि हम चारों को गांव से निकाल दिया गया है, इसलिए अब हम चारों एक साथ रहेंगे और एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ देंगे।
शेरू ! तुम्हारी बात सुनकर हमें खुशी हुई है। आओ, तुम दोनों भी हमारे साथ चलो।
तब वे चारों मिलकर वहां से आगे चल दिए।

वे चारों चलते गए, चलते गए। चलते-चलते उन्हें रात हो गई। वे एक वन में पहुंचे। तब शेरू ने कहा—
मित्रो ! रात हो गई है। इसलिए इस जंगल में आगे बढ़ना खतरे से खाली नहीं है। क्यों न आज की रात इसी जंगल में गुजार, हम कल सुबह आगे बढ़ें ?
तुम ठीक कह रहे हो शेरू।

वे एक पेड़ के नीचे रुक गए और आपस में बातें करने लगे। बातें करते-करते काफी रात बीत गई। तब बिरजू बोला —
रात काफी हो गई है। अब हमें सो जाना चाहिए।
बिरजू ! नींद तो मुझे भी आ रही है, लेकिन अनजान जगह है। ऊपर से बियाबान जंगल है...

...हम चारों को एक साथ नहीं सोना चाहिए। बारी-बारी से जागकर पहरा देना चाहिए।
हां, सुरक्षा की दृष्टि से यही ठीक रहेगा।

तब ठीक है। बिरजू और शेखर, तुम सो जाओ। मैं और मंगलू आधी रात तक जागकर पहरा देंगे। आधी रात के बाद मैं और मंगलू सोयेंगे और तुम दोनों पहरा देना।
नहीं शेरू, पहले तुम और मंगलू नहीं, बल्कि मैं और शेखर पहरा देंगे।

अतः पहले मंगलू और शेरू सोए।
और शेखर व बिरजू जागकर चौकीदारी करने लगे।

उन्हें चौकीदारी करते हुए अभी कुछ ही समय बीता था कि तभी ऊपर से आवाज आई —
नीचे से हटो। मैं नीचे गिरना चाहता हूं।

सुनकर शेखर और बिरजू ने चौंककर ऊपर देखा—
कौन है ऊपर?
हटो-हटो, मैं नीचे गिरना चाहता हूं।
ऊपर से फिर वही आवाज आई।

तब शेखर ने क्रोध में भरकर कहा—
हम नहीं हटेंगे, तुम्हें नीचे गिरना है तो गिरो।
अगले ही पल—
टप
ओह! यह तो आम गिरा है?
तो क्या ऊपर से इसी आम की आवाज आई थी?
कौतूहल में डूबा शेखर आगे बढ़ा और उसने पृथ्वी पर पड़ा आम उठा लिया। तभी आम बोला—
शेखर, इस प्रकार क्या देख रहे हो? सुबह होते ही तुम मुझे खा लेना। तब तुम जल्दी ही एक देश के राजा बन जाओगे?
क्या ऽऽऽ?
मैं ठीक कह रहा हूं शेखर! तुम जिस पेड़ के नीचे रुके हो, यह पेड़ कोई साधारण पेड़ नहीं, बल्कि जादुई पेड़ है। इस पेड़ के नीचे जो कोई भी रुकता है, यह पेड़ उसके कर्मों के अनुसार ही उसे उपहार देता है। तुमने सत्कर्म किए हैं, इसलिए मुझे खाने के पश्चात् तुम राजा बनोगे।
ओह! तो बड़ी विचित्र बात है?

तभी पेड़ के ऊपर से पुनः आवाज आई—
नीचे जो भी है, हट जाओ। मैं नीचे गिरना चाहता हूं।

अब की बार बिरजू ने कहा —
हम नहीं हटेंगे, तुम्हें नीचे गिरना है तो गिरो।

अगले ही पल एक आम टूटकर नीचे गिरा।
टप!

बिरजू ने आगे बढ़कर उस आम को उठा लिया। तब आम बोला —
बिरजू! तुमने भी अपने जीवन में अच्छे कर्म किए हैं, इसलिए सुबह होने पर तुम मुझे खा लेना। मुझे खाने के पश्चात् यदि तुम रोओगे तो तुम्हारी आंखों से आंसुओं के स्थान पर मोती गिरेंगे और तुम्हारे हंसने पर हीरे गिरेंगे।
ओह!

अब बिरजू और शेखर ने हैरत से एक-दूसरे की ओर देखा—
बिरजू! यह क्या चक्कर है?
शेखर! लगता है, तुम्हारी-हमारी किस्मत चमकने वाली है। आमों को सहेजकर रखलो। सुबह होने पर हम दोनों अपने-अपने आम खा लेंगे।
तब वे अपने-अपने आमों को अपने वस्त्रों में छिपाकर पुनः पहारा देने लगे।

आधी रात के बाद बिरजू और शेखर ने मंगलू और शेरू को जगा दिया।
मंगलू और शेरू, अब हम सोयेंगे।
ठीक है। तुम दोनों आराम से सो जाओ। अब मैं और मंगलू पहरा देंगे।

अब बिरजू और शेखर सो गए...
...और शेरू और मंगलू जागकर पहरा देने लगे।

कुछ देर बाद ही पेड़ पर से आवाज आई—
नीचे से हटो, हम नीचे गिरना चाहते हैं

शेरू और मंगलू ने चौंककर ऊपर की ओर देखा—
हटो, जबान मत चलाओ और नीचे से हट जाओ
कौन है ऊपर?

कौन बदतमीज है ऊपर, जो हमें इस तरह आदेश दे रहा है? जरा नीचे तो आओ, तब हम तुम्हें तुम्हारी गुस्ताखी का मजा चखायेंगे।
आम!
टप टप
मंगलू और शेरू आश्चर्य से आमों की ओर देखने लगे।
तब पृथ्वी पर पड़े दोनों आमों ने उनसे कहा—
हमें इस प्रकार हैरत से न देखो। हम ही तुम्हें आवाज दे रहे थे।
तुम हमें आवाज दे रहे थे?
हां, अब तुम एक-एक आम उठा लो। सुबह होने पर तुम दोनों अपने-अपने आम खा लेना। आम खाते ही तुम दोनों की तकदीर बदल जाएगी।
ओह! तब तो हम दोनों तुम्हें अवश्य खायेंगे।
दोनों ने जल्दी से आगे बढ़कर एक-एक आम उठा लिया। तत्पश्चात् पहले की तरह पुनः पहरा देने लगे।
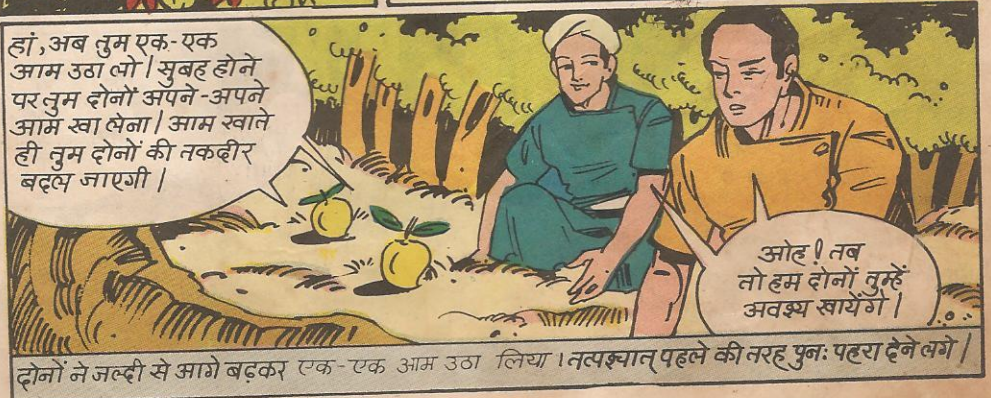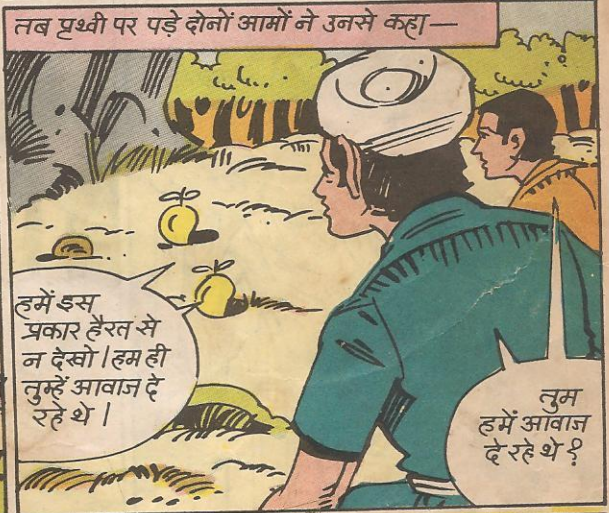
वे पहरा दे ही रहे थे कि वहां पर बुराई प्रकट हुई। उसे देखकर शेरू और मंगलू चौंके —
बुराई! तुम यहां?
हां, मैं तुम्हें चेताने आई हूं। पेड़ पर से गिरे जो दो आम तुम दोनों के पास हैं। तुम उन्हें मत खाना।
लेकिन क्यों न खायें?
क्योंकि दोनों आमों को खाते ही तुम्हारे बुरे दिन आ जायेंगे और तुम पर एक के बाद एक संकट आते चले जायेंगे।
ओह! तब हम क्या करें बुराई? तुम ही कोई रास्ता सुझाओ।
तो सुनो, तुम्हारे जैसे दो आम शेखर और बिरजू के पास भी हैं। तुम उनके आमों के स्थान पर अपने आम रख देना...
...और उनके आम उठाकर तुम दोनों खा जाना। उनके आम खाने के पश्चात् तुम्हारे अच्छे दिन आ जायेंगे। और जब शेखर और बिरजू तुम्हारे आम खायेंगे तो इन दोनों के बुरे दिन आ जायेंगे।
बुराई! तब तो हम वैसा ही करेंगे, जैसा तुम कहोगी।
यह सुनकर बुराई अदृश्य हो गई।

दोनों उसी समय सोते हुए शेखर व बिरजू के पास पहुंचे और उनके वस्त्रों में छिपे आमों को निकालने लगे।
बिरजू और शेखर के वस्त्रों में से आम निकालने के पश्चात उन दोनों ने बिरजू और शेखर के वस्त्रों में अपने-अपने आम रख दिए।
सुबह होने पर चारों ने अपने-अपने आम खाये।
तत्पश्चात्—
अब हमें आगे के सफर पर चलना चाहिए।
तो चलो, देरी किस बात की है?
चारों वहां से उठकर चल पड़े।
चलते-चलते जंगल को पार करके वे लोग एक राज्य में पहुंचे—
यह कैसा जलूस है? जलूस के आगे चलते हुए हाथी ने सूंड में माला क्यों पकड़ी हुई है?
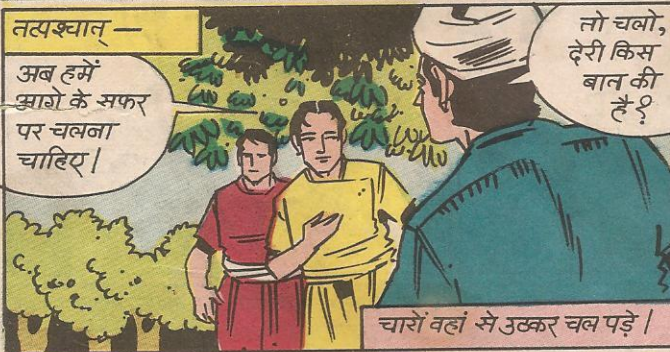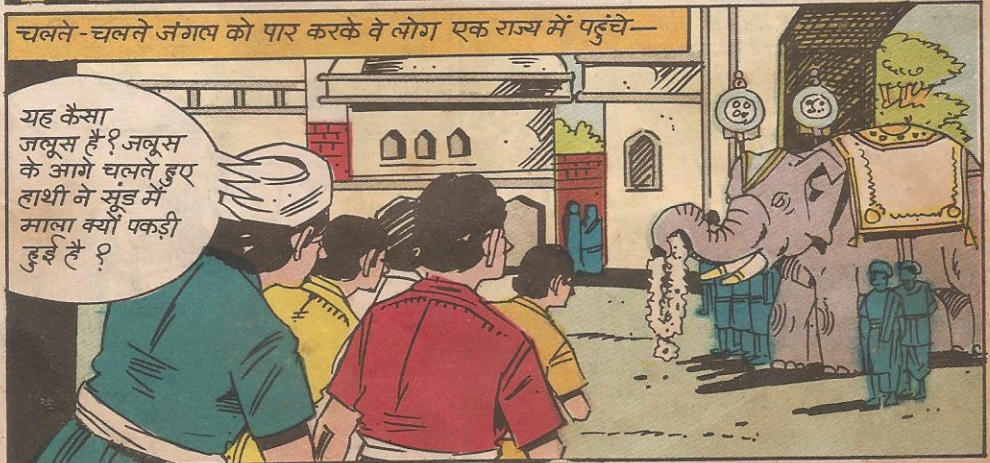
जलूस धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ उन चारों के समीप आ पहुंचा। तब हाथी आगे बढ़ा और उसने शेरू के गले में फूलों की माला डाल दी।
यह क्या माजरा है? हाथी ने मेरे गले में माला क्यों डाली है?
तभी भीड़ जय-जयकार कर उठी—
नये राजा की जय!
नये राजा अमर रहें।
यह सुनकर शेरू चौंका—
हैं! यह लोग मुझे अपना राजा मान रहे हैं। यह क्या चक्कर है?
शेरू को सोच में पड़े देखकर एक आदमी आगे बढ़ा—
मैं इस देश का राजपुरोहित हूं महाराज! हमारे देश के राजा का आज सुबह ही स्वर्गवास हुआ है। हमारे राजा निःसंतान थे। इसलिए प्रथा के अनुसार हाथी को फूलों की माला पकड़ाकर हम नए राजा की खोज में महल से निकले हैं। परम्परानुसार हाथी ने तुम्हारे गले में माला डालकर तुम्हें इस राज्य का नया राजा घोषित कर दिया है। आज से तुम इस देश के नए राजा हो।
ओह! तो बुराई का कथन सत्य हो गया? अब सचमुच ही मेरे दिन फिर जायेंगे।
दूसरी ओर राजपुरोहित का कथन सुनकर मंगलू खिलखिलाकर हंस पड़ा—
हा...हा...हा! शेरू उस्ताद इस देश का राजा हो गया। हा...हा...!
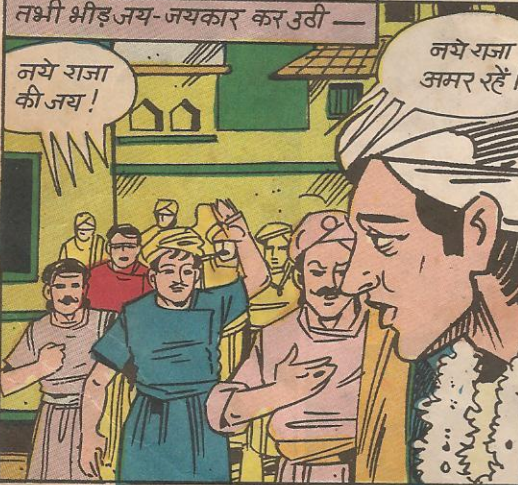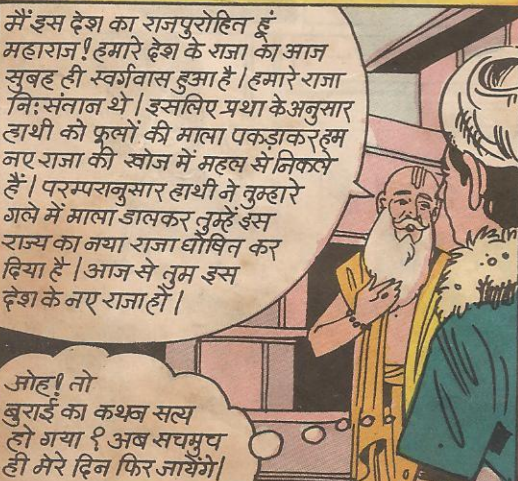
मंगलू के हंसते ही उसके मुंह से हीरे गिरने लगे।
अरे! यह क्या? हंसते ही मेरे मुंह से हीरे झड़ने लगे! यह क्या चक्कर है?

दूसरी ओर शेखर बिरजू से कह रहा था—
बिरजू! लगता है, कल रात जब हम सो रहे थे तो मंगलू और शेरू ने हमारे आम बदल लिए थे। तभी तो शेरू राजा बन गया और मंगलू के हंसने पर उसके मुंह से हीरे झड़े हैं।
शेखर! इसका मतलब तो यह हुआ मंगलू और शेरू ने अपनी चोरी करने की बुरी आदत को नहीं छोड़ा है। इन दोनों ने हमसे झूठ बोला था।
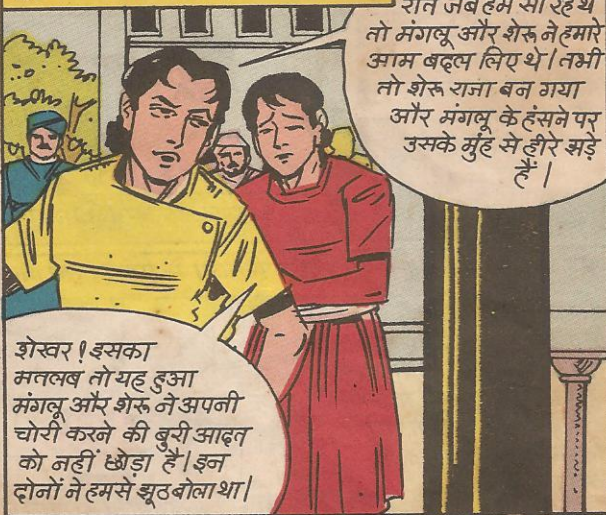
बिरजू! अब हम इन दोनों के साथ नहीं रहेंगे। ये चोर और मक्कार हैं।
तुम ठीक कह रहे हो शेखर। हमें यहां से चलना चाहिए।

वे वहां से चलने को उद्यत हुए तो शेरू ने उनसे कहा—
तुम दोनों कहां चले?
शेरू! अब तुम इस देश के राजा हो। तुम्हें व मंगलू को बहुत-बहुत बधाई। तुम दोनों की किस्मत तो खुल गई। अब मैं और बिरजू भी अपनी किस्मत आजमाने कहीं और जायेंगे।

जैसी तुम्हारी मर्जी शेखर!

तब अपने मुंह से झड़े हीरों के ढेर में से दो हीरे उठाकर मंगलू शेखर और बिरजू को देता हुआ बोला—
लो, तुम दोनों ये दो हीरे लेते जाओ। ये हीरे तुम दोनों की मुसीबत में काम आयेंगे।
शेखर और बिरजू ने मंगलू से हीरे ले लिए और वहां से चल दिए।
अब शेखर और बिरजू पास ही के दूसरे राज्य में पहुंचे। तब बिरजू ने शेखर से कहा—
शेखर! मंगलू के दिए दो हीरे हमारे पास हैं। तुम उन दोनों को किसी जौहरी के पास जाकर बेच आओ। हीरे बेचने से हमें जो धन मिलेगा, उससे हम कोई व्यापार करेंगे।
ठीक है बिरजू! तुम यहीं पर रुको, मैं अभी हीरे बेचकर आता हूं।
तब शेखर दोनों हीरों को बेचने के लिए बाजार की ओर चल दिया।
शेखर एक जौहरी के पास पहुंचा।
मैं इन हीरों को बेचना चाहता हूं।
इतने कीमती हीरे? ये इस फटेहाल आदमी के पास कहां से आए? लगता है, यह आदमी कोई चोर है। इसे पकड़वाना चाहिए।
यह सोचकर उसने पास से गुजरते सैनिकों से कहा—
इस आदमी के पास दो बहुमूल्य हीरे हैं। मुझे लगता है, यह कोई चोर है। आप इसे पकड़लीजिए।
सैनिकों ने जल्दी से शेखर से हीरे छीन लिए और उसे घसीटकर ले जाने लगे। घिसटता हुआ शेखर चिल्ला रहा था—
भाइयो! मुझे छोड़ दो! मैं बेकसूर हूं।
सैनिकों ने उसकी एक न सुनी और उसे ले जाकर कारागार में बंद कर दिया।

दूसरी ओर जब रात घिर आई और शेखर वापस न लौटा तो बिरजू परेशान हो उठा —

क्या बात है? शेखर हीरे बेचकर अभी तक वापस नहीं आया। कहीं वह किसी मुसीबत में तो नहीं फंस गया है?

बिरजू ने उस राज्य में शेखर की बहुत खोज की, पर वह उसे नहीं मिला। अब बिरजू बुरी तरह निराश हो उठा।
अब तो मैं बिल्कुल अकेला रह गया। अब मैं क्या करूं?

वह सोच में डूबा हुआ बैठा ही था कि सहसा उसे याद आया —
क्यों न मैं जंगल में उस पेड़ के पास चलूं, जिस पर जादुई आम लगते हैं? क्या पता इस बार फिर वह मेरी कोई सहायता कर दे?

यह सोचकर वह उठा और गिरता-पड़ता जंगल की ओर चल दिया।

जब वह उस पेड़ के नीचे पहुंचा तो बुरी तरह हांफ रहा था। कुछ देर सांस लेकर उसने मुंह ऊपर करके कहा —
जादुई पेड़! मैं बहुत संकट में हूं। क्या इस बार तुम मेरी कोई सहायता कर सकते हो?

तब अपने मुंह से झड़े हीरों के ढेर में से दो हीरे उठाकर मंगलू शेखर और बिरजू को देता हुआ बोला —
लो, तुम दोनों ये दो हीरे लेते जाओ। ये हीरे तुम दोनों की मुसीबत में काम आयेंगे।
शेखर और बिरजू ने मंगलू से हीरे ले लिए और वहां से चल दिए।
अब शेखर और बिरजू पास ही के दूसरे राज्य में पहुंचे। तब बिरजू ने शेखर से कहा —
शेखर! मंगलू के दिए दो हीरे हमारे पास हैं। तुम उन दोनों को किसी जौहरी के पास जाकर बेच आओ। हीरे बेचने से हमें जो धन मिलेगा, उससे हम कोई व्यापार करेंगे।
ठीक है बिरजू! तुम यहीं पर रुको, मैं अभी हीरे बेचकर आता हूं।
तब शेखर दोनों हीरों को बेचने के लिए बाजार की ओर चल दिया।
शेखर एक जौहरी के पास पहुंचा।
मैं इन हीरों को बेचना चाहता हूं।
इतने कीमती हीरे? ये इस फटेहाल आदमी के पास कहां से आए? लगता है, यह आदमी कोई चोर है। इसे पकड़वाना चाहिए।
यह सोचकर उसने पास से गुजरते सैनिकों से कहा —
इस आदमी के पास दो बहुमूल्य हीरे हैं। मुझे लगता है, यह कोई चोर है। आप इसे पकड़लीजिए।
सैनिकों ने जल्दी से शेखर से हीरे छीन लिए और उसे घसीटकर ले जाने लगे। घिसटता हुआ शेखर चिल्ला रहा था —
भाइयो! मुझे छोड़ दो! मैं बेकसूर हूं।
सैनिकों ने उसकी एक न सुनी और उसे ले जाकर कारागार में बंद कर दिया।

अगले ही पल —
टप्प

पृथ्वी पर गिरे आम में से आवाज आई—
बिरजू! जल्दी से मुझे उठाकर खा लो। मुझे खाते ही तुम में अद्‌भुत शक्ति आ जाएगी। तब तुम जिस बात को भी मन में सोचोगे, वह तुरंत पूरी हो जाएगी।

बिरजू ने तुरंत आम को उठाकर खाना प्रारम्भ कर दिया।

आम खाने के पश्चात् उसने मन ही मन कहा —
मैं जल्दी से वहां पहुंच जाऊं, जहां इस समय मेरा मित्र शेखर है।

उसके कहने भर की देर थी। अगले ही पल वह कारागार में शेखर के सामने था।
शेखर! तुम कारागार में कैसे आए?
तब शेखर ने उसे अपनी आपबीती सुनाई।

सारी बात जानने के पश्चात् बिरजू ने मन ही मन कहा —

मैं और शेखर तुरंत शेरू और मंगलू के पास पहुंच जाएं।

अगले ही पल वे उस कक्ष में थे, जिसमें बैठे शेरू और मंगलू गुप्त मंत्रणा कर रहे थे —

मंगलू! हमारी तकदीर ने क्या पलटा खाया है? कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं राजा और तुम प्रधानमंत्री बनोगे।

शेरू! अब हम लोगों पर नए-नए कर लगाकर खूब मजे से ऐश करेंगे।

भला हो बिरजू व शेखर का, जिनकी वजह से हमें चमत्कारी आम मिल सके।

पता नहीं वे दोनों मूर्ख इस समय कहां की धूल फांक रहे होंगे?

यह सुनकर शेखर और बिरजू परदे के पीछे से निकलते हुए बोले —

हम यहां हैं चालबाजो।

तुम दोनों यहां कैसे आए? तुम्हें यहां घुसने किसने दिया?
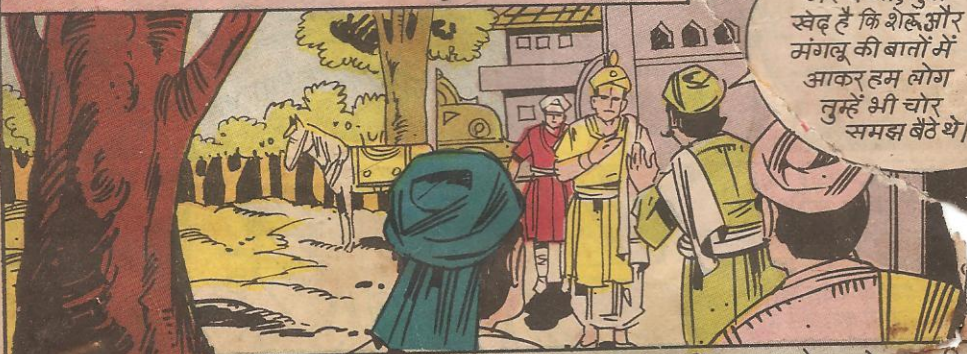
सुनकर बिरजू ने मन ही मन कहा—
ये दोनों शातिर चालबाज तुरंत मर जाएं और इस देश के लोग मुझे प्रधानमंत्री व शेखर को नया राजा सहर्ष स्वीकार कर लें।
अगले ही पल —
आह!
आह!
दोनों पेट पकड़े कराहते हुए भूमि पर गिर पड़े। कुछ देर तड़पने के पश्चात् दोनों ने प्राण त्याग दिए।
तभी वहां राजपुरोहित ने प्रवेश किया —
मैं नये राजा और नये प्रधानमंत्री का स्वागत करता हूं।
बड़ी धूम-धाम से शेखर को उस देश का राजा बनाया गया। शेखर ने बिरजू को अपना प्रधानमंत्री बना लिया।
राजा और प्रधानमंत्री बनने के पश्चात् शेखर और बिरजू एक दिन अपने गांव वापस आए और सब लोगों को अपने बारे में बताया। सारी बात जानकर मुखिया जी बोले —
मेरे बच्चो, मुझे खेद है कि शेरू और मंगलू की बातों में आकर हम लोग तुम्हें भी चोर समझ बैठे थे।
अपने गांव वालों व घर वालों से मिलकर वे वापस लौट गए। शेखर बड़ी कुशलता से अपने राज्य की देख-भाल करने लगा। बिरजू इस कार्य में उसे पूरा सहयोग देता था।
* समाप्त *